International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 4, April 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

निराला के काव्य में प्रगतिशील तत्व

डॉ शिवदयाल पटेल
सहायक प्राध्यापक हिंदी
शासकीय महाविद्यालय बरपाली, जिला- कोरबा, छत्तीसगढ़

भूमिका

हिन्दी काव्य में प्रगतिवाद के साथ प्रचलित दूसरा शब्द है, प्रगतिशील। समाज की प्रगति को लक्ष्य बनाकर लिखा जानेवाला साहित्य ही प्रगतिशील है। प्रगतिशीलता में लघुता के प्रति संवेदनात्मक रुझान होती है तो प्रगतिवाद में मार्क्सवादी अवधारणा का अनुबन्ध यानी आधार-अधिरचना का द्वन्द्वात्मक संबन्ध, वर्ग संघर्ष और सर्वहारा की पक्षधरता। प्रगतिशील काव्य तो 'वाद' की सीमा के बाहर है। असल में प्रगतिवादी आन्दोलन के पहले ही निराला जी प्रगतिशील रहे हैं। सन् 1940 ई के बाद प्रकाशित कुकुरमुत्ता, अणिमा, बेला, नये पत्ते जैसे कविताओं में निराला की प्रगतिशील चेतना ज्यादा प्रखर दिखाई देती है। कुकुरमुत्ता, खजोहरा, रानी और कानी जैसी कविताएँ निराला की प्रगतिशील चेतना के कुछ उदाहरण है। नये पत्ते की "देवी सरस्वती" नामक लंबी कविता उनकी प्रगतिशील रचनाधर्मिता की उत्तम उपलब्धि है। पश्चिमी साहित्य की देखादेखी भारतीय साहित्यकारों ने प्रगतिशील लेखक संघ की स्थापना सन् 1936 ईं में की। स्वर्गीय उपन्यासकार प्रेमचन्द उसके अध्यक्ष चुने गये थे। डॉ. रामविलास शर्मा जी प्रगतिशील आन्दोलन के प्रबल समर्थक हैं।

तत्कालीन प्रगतिशील तत्व

रूढिवाद का खण्डन, ब्रिटिश शासन की दमन-नीतियाँ, अछूत प्रथा, जातिवाद, नारी विमोचन, मज़दूर आन्दोलन, किसान आन्दोलन और नवसाहित्य आन्दोलन क्रान्तिकारी

साहित्यकारों को प्रेरणादायक सिद्ध हुए। जन जीवन से संपर्क जोडकर उससे ऊर्जा ग्रहण करनेवाले साहित्यकार इन तत्वों से दूर नहीं रह सकते थे। यदि प्रगतिवाद की लब्धप्रतिष्ठ विधाओं से हिन्दी साहित्यकार दूर हो गये तो उसका कारण ये प्रगतिशील तत्व मात्र है। यह भारतीय चिंतन और जीवन के प्रति साहित्य-साधना के आभार का परिचय करानेवाला है। व्यक्तिनिष्ठ छायावादी प्रवृत्ति से भिन्न समाजवादी दृष्टिकोण को अपनाते हुए सामाजिक यथार्थ का चित्रण करना कवियों ने अपना कर्तव्य समझा। डॉ. रामविलास शर्मा जी प्रगतिशील आन्दोलन के प्रबल समर्थक हैं। परन्तु इस विषय में उपर्युक्त प्रगतिशील तत्वों ने अवश्य निर्णायक प्रेरणा दी है। प्रगतिशील एवं क्रान्तिकारी कवि निराला जैसे साहित्यकारों की प्रगतिशीलता का अध्ययन करने केलिए प्रगतिशील तत्वों का विवेचन अनिवार्य है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 4, April 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

निराला के काव्य में प्रगतिशील तत्व

आज की कविता उन्नीसवी सदी की कविता से अलग हो रही है। कविता का रूप, भाव, गेयता, अन्तर्गुण सबके सब परिवर्तित हुए हैं। गत एक सौ वर्षों में संसार, मनुष्य और उसका जीवन पूर्ण रूप से परिवर्तित हुआ है। इस परिवर्तन का प्रतिबिंब उस कविता में भी दर्शनीय है। आधुनिक कविता के कुछ गुण इस प्रकार हैं। 1. काव्यात्मक भाषा का अभाव 2. प्रतीक, तुक और छन्द से छूट 3. प्रतीकों का प्रयोग केवल सामान्य जीवन से ही होता है 4. सामान्य बोलचाल की भाषा का प्रयोग 5. प्रपंच के समस्त विषयों से हटकर केवल सामान्य परिकल्पनाओं के

आधार पर विषय चुनाव 6. मनोवैज्ञानिक प्रतीकों का प्रयोग

7. दूसरी भाषाओं की शब्दावली, कहावतें आदि का प्रयोग।

आधुनिक कविता के इन गुणों के आधार पर निराला के काव्य में प्रगतिशील तत्वों को विवेचना की जा सकती है। काव्य-प्रयोजन संबन्धी व्यक्त धारणाओं को सामने रखकर निराला ने अपनी प्रगतिशील कविताओं का प्रणयन किया। "निराला के काव्य में प्रगतिशील और प्रयोगशील तत्व तो आरंभ से ही विद्यमान थे ।" समाज-हित को लक्ष्य करने वाले कवि की अधिकांश कविताएँ प्रगतिशील तत्वों का उन्नयन करनेवाली हैं। युग-चेतना से प्रेरित कवि ने रूढिवाद का खण्डन, ब्रिटीश शासन की दमन नीतियाँ, अछूत प्रथा, जातिवाद एवं सांप्रदायिकता, नारी विमोचन, आर्थिक असन्तुलन एवं शोषण से प्रेरित मज़दूर आन्दोलन एवं किसान आन्दोलन, नव साहित्यान्दोलन आदि प्रगतिशील तत्वों को अपनी कविताओं में विशेष महत्व दिया। निराला की छोटी-बडी सारी कविताएँ जन-जीवन के उत्कर्ष के साधन के रूप में समर्पित थीं। अत: कवि के रूप में निराला की देन का सही मूल्यांकन उनसे प्रस्तुत प्रगतिशील तत्वों के विवेचन से ही संभव है।

1. रूढिवाद का खण्डन

प्रगतिशील कवि निराला स्वभावत: क्रांतिकारी थे। वे पुरातनता के रूढिग्रस्त मार्गों के कट्टर शत्रु थे। वे रूढियों का खण्डन करके नये जीवन के दर्शन कराने चाहते थे। "निराला की प्रगतिशील चेतना उनके प्रौढ परिपक्व चिन्तन की प्रकृति है, जिसमें रचयिता का विद्रोह पक्ष अधिक महत्वपूर्ण है"। तत्कालीन जगत की परंपराओं, अंधविश्वासों और अनाचारों को वे पसंद नहीं करने थे। प्रगति के उन्नायक विशिष्ट तत्वों के आविष्कार एवं समर्थन कवि अपने जीवन का लक्ष्य मानते थे। निराला के प्रगतिशील विचारों का सच्चा परिचय रूढिवाद के विरुद्ध प्रस्तुत कविताओं से हो प्राप्त हो सकता है। उद्बोधन, बादल-राग, पास ही रे हीरे को खान, बापू के प्रति. भगवान बुद्ध के प्रति, क्या दुख

दूर कर दे बन्धन, तुलसीदास और सरोज-स्मृति में रूढिवाद की यथासंभव चर्चा हुई है, जो निराला के प्रगतिशील विचारों का सच्चा परिचय करानेवाले हैं।

'उद्बोधन' में प्राचीनता का ध्वंस करने का आह्वान है। निराला नव जीवन का पक्षपाती है। उनका यह आग्रह है 'क सदियों से बने रहनेवाले अन्धविश्वास नष्टभ्रष्ट हो जाएँ। वे चाहते है कि जीवन के आकाश और भूमि में एक नया सुगन्ध छा जाए। एक नूतन स्वर और ताल से दिशाएँ मुखरित हो जाएँ।जीर्ण-शीर्ण नियमों के अवशिष्ट तक लुप्तप्राय हो जाए। सदियों से जकडे हृदय कपाट खुल जाए। निराला का यह आह्वान है-

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 4, April 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

"छोड, छोड दे शंकाएँ, रे निर्झर-गर्जित वीर !

उठा केवल निर्मल निर्घोष;

देख सामने, बना अचल उपलो को उत्पल, धीर !

प्राप्त कर फिर नीख सन्तोष।"

कवि आशा करते हैं कि सारी शंकाएँ दूर हो जाएँ। देश के गौरव-गान से पृथ्वी एवं आकाश मुखरित हो उठे। यहाँ नवीनता एवं परिवर्तन के प्रति निराला का स्पष्ट आग्रह है।

'बादल राग' में पुरानी प्रथा से जन्य आलस्य को दूर करके नवीनता की वर्षा करनेवाले वादल का संगीत प्रस्तुत हुआ है। कवि आशा करते हैं कि एक नया अमर राग आकाश में भर जाए।

"अरे वर्ष के हर्ष !

बरस तू, बरस-बरस रसधार !

पार ले चल तू मुझको,

बहा, दिखा मुझको भो निज

गर्जन-गौरव-संसार।

यहाँ रूढियों का नाश एवं नवीनता का उत्कर्ष प्रकट किये गये है। कवि की दृष्टि में बादल अन्ध-तम-अगम-अनर्गल है। विल्लव के प्लावन से नयी जलधारा बहाने की आशा बादल में है। यहाँ पुराने संसर का परित्याग करने का आह्वान भी है .

"छोड अपना परिचित संसार-

सरभि का कारागार,

चले जाते हो सेवा-पथ पर,

तरु के सुमन !'

दुख के अंतपुर का उद्घाटित द्वार छोडकर उत्सुक नयनों वाले बन्धुओं के संग रहने की आशा भी व्यक्त की गयी है।

'सरोज-स्मृति' में निराला जी इस विश्वास का निराकरण करते हैं। एक दिन वे आँगन में बैठकर अपनी कुण्डली पढ रहे थे। उसमें दो विवाह का वर्णन पढकर उनको हँसी आयी और उन्होंने कुण्डली को खण्डित करना चाहा। वे भविष्य को शंकाहीन दृष्टि से देखने के पक्ष में थे-

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 4, April 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

'आँगन में फाटक के भीतर

मोढे पर, ले कुण्डली हाथ

अपने जीवन की दीर्घ गाथ।

पढ लिखे हुए शुभ दो विवाह

हँसता था, मन में बढी चाह

खण्डित करने को भाग्य-अंक

देखा भविष्य के प्रत अशंक।'

विवाह के अवसर पर होनेवाली फिजूल खर्चा का निराला जो विरोध करते थे। अपना रोब दिखाने केलिए बहुसंख्यक लोगों की बारात और उनके सेवा-सत्कार का प्रबन्ध करना रूढिगत बन गया है। निराला ने सरोज का विवाह अल्पसंख्यक आमंत्रित साहित्यकारों की उपस्थिति में बहुत कम खर्च करके कराया था -

आमन्त्रित साहित्यिक, ससर्ग

देखा विवाह आमूल नवल।'

प्रगतिशील विचारों से ओत-प्रोत निराला जी आजीवन रूढियों एवं परंपराओं का उल्लंघन करने का साहस दिखाते थे और अपने पाठकों को उसी प्रकार करने का आह्वान करते थे।

2. ब्रिटीश शासन की दमन-नीतियाँ

ब्रिटिश शासन धन, मान एवं प्रताप से भारतीयों को दबाकर रखना चाहते थे। शोषण नीति से प्रेरित अंग्रेज यहाँ के लोगों की कमज़ोरी एवं आपसी झगडे से लाभ उठाने के पक्ष में थे। यहाँ से कच्चा मल कम मूल्य पर विदेश ले जाकर चीजें बनाकर वे यहाँ बेचकर पैसा कमाते थे। ईस्ट इंडिया कंपनी का मुख्य लक्ष्य व्यापार चलाना मात्र था। धीरे-धीरे कंपनी ने राजनैतिक लक्ष्यों से एक एक करके विभिन्न भारतीय प्रदेशों को अपने अधीन कर लिया। इस प्रकार भारत उनके प्रत्यक्ष शासन के अधीन रहने वाले प्रदेशों और अप्रत्यक्ष शासन वाली रियासतों का एक देश बन गया।

निराला की 'बापू के प्रति' कविता भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के वरिष्ठ नेता और राष्ट्रपिता गाँधीजी की महिमा व्यक्त करनेवाली है। इससे यह स्पष्ट है कि गाँधीजी ब्रिटिशवालों की जिन जिन दमन-नीतियों के विरुद्ध आवाज उठाते थे, उन सबका विरोध कवि भी करते थे। देश को मुक्त करने में, कवि की दृष्टि में, गाँधीजी ही सफल हो सकते। अतः निराला जी गाँधीजी का भजन करने को तैयार होते हैं।

'समर करो जीवन में' एक मुक्तक कविता है, जिसमें निराला ने जनता के लिए

सोध समर करने का आह्वान दिया है। इससे यह स्पष्ट है कि प्रगतिशील विचारवाले कवि क्रान्ति के पक्ष में थे। वे जनता केलिए आत्मसमर्पित हो जाने का आह्वान भी देते हैं। आजीविका केलिए विदेशियों से लुटे जाकर

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 4, April 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

आत्माभिमानहीन रहना उन्हें पसन्द नहीं था। वे मुक्ति का आन्दोलन चलानेवालों के चारित्रिक महत्व पर भी प्रकाश डालते हैं-

"मरो सत्य पर अवकल

शर की तरह मारकर,

छल छाया से तरो, न भय से तुम विदेश विचरो।"

असल में निराला जी चारित्रिक महत्व एवं देशाभिमान पर बल देते थे।

"राजे ने अपनी रखवाली की" कविता तत्कालीन ब्रिटिश शासन का दिग्दर्शन करानेवाली और उसकी सशक्त आलोचना है। सामन्ती शासन की सुरक्षा केलिए, राजा ने, जो कुछ संभव है, वे सब किये। परिणामस्वरूप मतलबी सामंत चापलूस करने लगे और कवियों ने शासन की प्रशंसा में गीत गाये। लेखकों और इतिहासकारों ने शासन के बारे में लेख लिखे। नाट्यकारों ने शासन की स्तुति में अपना कलाकौशल प्रकट किये। लोकनारियों केलिए शासकों की पत्नियाँ आदर्श बन गयीं। इन सबसे स्पष्ट है कि शासकों के डर से सबके सब उसके समर्थक बन गये।

"जनता पर जादू चला राजे के समाज का।

लोक-नारियों केलिए रानियाँ आदर्श हुई।

धर्म का बढावा रहा धोखे से भरा हुआ।

लोहा बजा धर्म पर, सभ्यता के नाम पर।

खून की नदी बही।"

धर्म एवं सभ्यता के नाम पर धोखेबाजी ही चली। अनेक संघर्ष हुए और खून की नदियाँ बहीं। ये सब भ्रष्टाचार शासक के नैतिक बल के डर से पनप उठे। जनता ने आँख-कान मूंदकर छिपे रहने का निश्चय किया, क्योंकि शासक का आतंक भरा हुआ था। ब्रिटिश शासन की दमन नीतियों के इस परिणाम को दिखाकर युग-चेतना संपन्न कवि ने परोक्ष रूप से ब्रिटिशवालों के शासनाधिकार को जड़ से उखाडकर फेंक देने का उपदेश दिया है।

3. अछूत प्रथा

स्वार्थ एवं स्वाभिमान से प्रेरित मनुष्य अपने को दूसरों की अपेक्षा श्रेष्ठ सिद्ध करने की चेष्टा करते हैं। वर्णाश्रम-धर्म के बिगड जाने के कारण जातिगत उच्चनीचता भारतीय जनजीवन में स्थान पा चुकी थी। अठारहवीं सदी तक आते आते हिन्दू-समाज पर तांत्रिक नियमों का पालन करने की प्रथा रूढमूल हो गयी। परिणाम स्वरूप चण्डालों तथा निम्न जाति वालों के स्पर्श एवं सामाजिक संबन्ध से जातिगत श्रेष्ठता के गिर जाने का भय समाज में फैल गया। इस प्रकार अछूत-प्रथा का पालन न करने के कारण जातिच्युत लोगों को प्रायश्चित करना पड़ता था। यह कुप्रथा समूचे भारत में फैल गयी थी और वह समाज के बहुसंख्यक लोगों के सांस्कृतिक एवं सामाजिक पतन का कारण भी बन गयी। सुधारवाद आन्दोलनों के बावजूद निराला के समय में यह अछूत प्रथा ज्यों का त्यों बनी रही

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 4, April 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

और अछूतों की हालत अत्यंत दयनीय थी। कवि ने अपने 'प्रेमसंगीत' नामक मुक्तक एवं स्वामी परमानन्दजी महाराज' शीर्षक लंबी कविता में अछूत प्रथा का निरूपण किया और उसके प्रति अपना घोर विरोध प्रकट किया।

'प्रेमसंगीत' में कवि के ब्रह्मण का लड़का होने पर भी निम्न जातिवाली पनहारिन पर मुग्ध हो जाने का जीता-जागता वर्णन मिलता है। प्रेम-भावना ही महत्वपूर्ण है और छुआछूत की प्रथा और रूढिगत अनाचार उसके सामने नहीं टिक सकते। कवि अपने हृदय का भावातिरेक यों प्रकट करते हैं-

"ले जाती है मटका-बडका

मैं देख-देखकर धीरज धरता है"।

निम्न जाति वाली पनहारिन से प्रेम-संबन्ध को मना करनेवाली अछुत प्रथा को इधर कवि अपने आचरण से चुनौती देते हैं।

"स्वामी परमानन्दजी महाराज' कविता में निरालाजी रामकृष्ण मिशन के आदर्शों के प्रति अपना आदर प्रकट करते हैं और यह स्थापित करते हैं कि छुआछूत एवं संबद्ध दुराचार सचमुच निरर्थक है। राजकर्मचारी ने स्वामीजी को भोज के लिए निमंत्रण दिया। स्वामीजी भोज के अवसर पर निम्नजाति वालों के साथ एक पंक्ति में बैठकर खाने लगे। यह देखकर राजकर्मचारी ने कहा -

'एक दिन ब्राह्मणों ने

हम पतित किया था

शूद्र कहलाये हम

किन्तु श्रीविवेक और

आप-ऐसे कृतियों ने

धन्य हमें कर दिया"

छुआछूत की प्रथा का विरोध करने और मानव-समानता पर विश्वास करने का जो आदर्श रामकृष्ण-मिशन ने फैलाया, उसका इधर समर्थन हुआ है।

4. जातिवाद

निराला जी के युग में जातिवाद की पराकाष्ठा थी। सामाजिक एकता के अभाव से देश को विदेशियों की दासता स्वीकार करनी पड़ी थी। जातिवाद के फलस्वरूप निम्नजाति में जन्मे शूद्र को अंगीकार न मिलता था और समाज ने उसको हीन जाति का माना। यह वर्णाश्रम धर्म को बिगाडकर 'जन्मकर्म विभागच्छ' मान लेने का दुष्परिणाम भी था। व्यक्तिगत गुण नहीं, जन्म की जाति ही श्रेष्ठता का आधार माना गया। राजा राममोहनराय ने इसको देश की एकता को भारी बाधा मान ली थी। निराला जी ने अपनी 'प्रेमसंगीत' और 'गर्म पकौडी' मुक्तकों

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 4, April 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

और 'तुलसीदास', 'राम की शक्तिपूजा', 'कुकुरमुत्ता', 'स्वामी प्रेमानन्द जी महाराज' आदि लंबी कविताओं में भी यत्र-तत्र जातिवाद का खण्डन किया है।

'प्रेमसंगीत' में छुआछूत की प्रथा एवं अस्पृश्यता को जातिवाद की उपज दिखायी गयी है। कवि ब्राह्मण का लडका है, तो भी निम्न जाति वाली पनहारिन से प्यार करता है उतना ही नहीं, कवि ने यह स्थापित किया है कि जातिगत भेद-भावना प्रेम के क्षेत्र में मान्यता नहीं प्राप्त कर सकती।

अपनी प्रतीकात्मक कविता 'गर्म पकौडी' में निरालाजी ने सुधारवादियों के पथ में बाधाएँ उपस्थित करनेवाले निम्नजाति वालों पर कटाक्ष किया। कवि कहते हैं -

"अरी तेरे लिए छोडी

बम्हन की पकायी

मैं ने घी की कचौडी।"

ब्राह्मण की सहज श्रेष्ठता की उपेक्षा करके निम्न जाति वालों का उद्धार करने के लिए प्रयत्न किये गये। तेल की भुनी और नमक-मिर्च की मिली गर्म पकौडी जीभ को जला देती है। उसको दाढ के तले खाये बिना दबाकर रखना ही पडा। दिल लेने के बाद उसने कपड-सा फींचना ही चाहा। अतः कवि की यह निवेदन है कि हे निम्न जाति वाले, तुम अपने हितषियों और सुधारकों का पूर्ण समर्थन करो और उनकी खुशी केलिए अपने को समर्पित करो। इससे यह निष्कर्ष हम निकाल सकते है कि निम्न जाति वालों के पूर्ण जागरण एवं सहयोग के बिना जातिवाद को हम भारतीय जन-जीवन से हटा नहीं सकते।

'तुलसीदास' कविता में निराला जी तुलसी के समकालीन भारतीय जन- जीवन पर प्रकाश डालते हैं। शूद्र निम्न जाति वाले समझे जाते थे। कवि को पीड़ा है कि वे समाज के लिए अभिशाप और कलंक माने जाने लगे थे। उनकी हालत का चित्रण यों हुआ है -

"चलते-फिरते, पर निस्सहाय,

वे दीन, क्षीण कंकालकाय

आशा-केवल जीवनोपाय उर-उर में,

रण के अश्वों से शस्य सकल

दलमल जाते ज्यों, दल के दल

शूद्रगण शूद्र-जीवन-सम्बल, पुर-पुर में"

निम्नजातिवाले शूद्र मूक पशुओं की भाँति दबाये जाते थे और उच्चवर्ग वालों के हाथों से उनको कभी कभी प्रहार भो मिलता था। वर्णाश्रम-रक्षण के बहाने से उनपर किये जानेवाले अत्याचार कवि को पंडित करते थे। शूद्रगणों के क्रन्दन का स्वर इन पंक्तियों में गूंज उठता है –

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 4, April 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

"सोचते कभी, आजन्म ग्रास द्विजगण के

होना ही उनका धर्म परम,

वे वर्णाधम, रे द्विज उत्तमे,

वे चरण-चरण बस, वर्णाश्रम-रक्षण के"

जातिवाद के आधार पर निम्नजाति वालों पर जो गुरु-भार रखा गया था, वह सचमुच असह्य था। उच्चजाति वाले भी तुलसी के समय में इस्लामिक आक्रमण के कारण पीडित रहते थे। भय की छाया उनके मनोनभ पर फैली हुई थी। इस प्रकार भारत की सारी जातियों पर जो आतंक पडा, उसका दिग्दर्शन 'तुलसीदास' कविता के द्वारा प्रस्तुत हुआ है। निराला के मन में जातिगत भेद-भावना को मिटाने और समस्त जनों के कल्याण का दृढ़-संकल्प रहता था।

'स्वामी प्रेमानन्दजी महाराज' कविता में जाति-पाति के आधार पर हुए सामाजिक विघटन की निन्दा की गयी है। स्वामी प्रेमानन्द जी का जन्म ब्राह्मण-कुल में हुआ था। लेकिन वे जाति पाँति को नहीं मानते थे और स्वामी रामकृष्ण मिशन के आदर्शों का पालन करते थे। स्वामी का यह कथन विचारणीय है -

"सन्यासी होने पर

देश-काल-पात्रता से

दूर हम हुए हैं,

रामकृष्णमय जीवन

सर्व जनों के लिए

ब्राह्मण केगृह जिनका

शुभ जन्म हुआ था,

उनके दर्शनों को

हम या विवेकानन्द

नहीं गये थे वहाँ,

जो थे परमात्मालीन

त्यागी-योगी सिद्धेश्वर

उन्हीं प्रवर से सीखें

ली है हम लोगों ने

विगत जाति-कुल से"

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 4, April 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

स्वामीजी ने विभिन्न जातिवालों तथा पश्चिम के लोगों के साथ मिश्र-भोजन करने का आदर्श दिखाया है। दूसरे प्रसंग में नारद-विष्णु संवाद के द्वारा जातिपाँति नहीं, भगवान के स्मरण को ही मृत्युलोक में उन्नत स्थान प्राप्त करने का मार्ग घोषित किया गया है। पुजा- अचन संबन्धी मर्यादाओं तथा ब्राह्मण-प्रोक्त विधानों का निषेध भी इधर हुआ है। यहाँ निराल ने भगवान के सामने सबको समान अधिकार प्राप्त करने का जो अधिकार है, उसका समर्थन किया है। तीसरा प्रसंग श्रीकृष्ण-दर्शन केलिए राजप्रसाद के मध्य में स्थित मंदिर में प्रवेश करने का है। विदेशी युवक को ब्राह्मण-संतरी ने अन्दर घुसने न दिया। स्वामीजी को इस पर बडा क्रोध आया। अन्दर पहुँचने पर स्वामीजी के ऊपर कृष्ण की शक्ति छा गयी। उसको देखकर सब लोग विस्मित हुए। स्वामिजी के द्वारा निराला ने यह कहलाया है कि भगवान कृष्ण मन्दिर के बाहर स्थित विदेशी से अभिन्न है। यहाँ जातिवाद के विरुद्ध आवाज उठाते हुए कवि ने स्वदेशी-विदेशी भेद को भी मिटाने का आह्वान किया है। कवि की लोकमंगल-भावना भारतीय विचारधारा से विकसित एवं सच्चे हिन्दू-धर्म पर आधारित है।

5. नारी विमोचन

भारतीय संस्कृति में नारी का महत्वपूर्ण स्थान माना गया था। वह मा, रमा और मंगलदेवी समझी जाती थी। स्त्री-पुरुषों की समता वेदों ने भी स्थापित किया। कालांतर में स्त्री का सामाजिक स्थान बुरी तरह गिर गया। मनुस्मृति में नारी स्वातंत्र्य के विरुद्ध बातें कही गईं है। स्मृतिकार ने वास्तव में स्त्री के हित एवं सुरक्षा के पालन का विशेष दायित्व लोगों को समझाना मात्र चाहा था। स्वातंत्र्य-पूर्व युग में भारतीय स्त्री को पुरुष की इच्छाओं का पालन करनेवाला उपकरण मानने की प्रवृत्ति फैल गयी थी। स्वामी दयानन्द सरस्वती, राजा राममोहन राय, महादेव गोविन्द रानडे तथा एनी बसेंट ने भारतीय स्त्रियों की गरिमा बढाने और उनको दबाकर रखने के लिए प्रचलित किये गए दुराचारों को हटाने का प्रयत्न किया। सती प्रथा, विधवा-विवाह निषेध, देवदासी प्रथा, वेश्यावृत्ति आदि के विरुद्ध इन सुधारकों ने आन्दोलन चलाया। महात्मा गाँधी ने स्वतंत्रता-आन्दोलन में स्त्रियों को भाग लेने का आह्वान किया, स्त्री पुरुष समता का समर्थन किया।

सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला ने तत्कालीन नारी-विमोचन आन्दोलन का पूर्णतः समर्थन किया। उन्होंने अपनी 'विधवा', 'सम्राट अष्टम एडवर्ड के प्रति', 'प्रेम संगीत', 'रानी और कानी' मुक्तकों और 'पंचवटी-प्रसंग' एवं 'सरोज-स्मृति' इन लंबी कविताओं में नारी की दुःस्थिति का जीता-जागता वर्णन यत्र-तत्र किया है।

'विधवा' कविता में विधवा की दीन-हीन दशा का वर्णन शुरु में मिलता है। कवि मानते हैं कि विधवा

"व्यथा की भूली हुई कथा है

उसका एक स्वप्न अथवा है"

'सरोज-स्मृति' में नारी को विवाह-संबन्धी महत्वपूर्ण समस्याओं की चर्चा हुई है। जब सरोज सयानी हुई और कवि ने उसका विवाह कराने के बारे में सोचा। कुलमर्यादा और रूढियों का पालन करने की असमर्थता एवं अनौचित्य उनके मन में आये। दहेज देना, बारात की अगुवानी करना आदि अनावश्यक व्यय नारी-विवाह को बोझिल बना देते हैं

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 4, April 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

"जो कुछ है मेरा अपना धन

पूर्वज से मिला, करूँः अपर्ण

यदि महाजनों को, तो विवाह

कर सकता हूँ, पर नहीं चाह

मेरी ऐसी, दहेज देकर

में मुर्ख बनूँ, यह नह सुधार

बारात बुलाकर मिथ्या व्यय

मैं करूँ, नहीं ऐसा सुसमय।

तुम करो ब्याह, तोडता नियम"

निराला इन दुराचारों को तोडकर सरोज से विवाह करने का प्रस्ताव प्रतिश्रुत वर के सम्मुख रखते हैं और वह उन सबको स्वीकार करता है। इस प्रकार नारी-विवाह संबन्धी सार व्यय-जनक दुराचारों का निषेध करना कवि ने अपना कर्तव्य माना है। निराला-काव्यों में नारी की चिरन्तन समस्याओं का व्यापक प्रतिपादन नहीं हुआ है। निराला समाज-सुधारक नहीं, कवि थे। अत: तत्कालीन समाज-सुधार भावना का संपूर्ण समर्थन करते हुए काव्य-प्रसंगों के अनुसार यथासंभव चर्चा मात्र उन्होंने योग्य समझा है।

6. मज़दूर आन्दोलन

जिस युग में निराला जी पैदा हुए थे, उस समय भारतीय मज़दूरों के ऊपर सारी शासन व्यवस्था,समाज-व्यवस्था धर्म-व्यवस्था और अर्थ-व्यवस्था का दबाब पड रहा था। जब सन 1908 ईं में लोकमान्य तिलक को बन्दी बनाया गया, तब सारे भारत के मजदूरों ने हडताल को। रूसी नेता लेनिन ने इसके बारे में लिखा "भारतीय मज़दूर पहले ही इतना सजग और संगठित है कि वह वर्गचेतना के आधार पर जनवादी राजनीतिक संघर्ष लड सकता है कि दमन के एंगलों-रूसी साधन असफल सिद्ध हुए हैं"। लेनिन का यह मत अनुदिन सचेत हो नेवाले भारतीय मजदूर आन्दोलन के लिए एक चिरस्मरणीय प्रमाण-पत्र है। राजनैतिक एवं सास्कृतिक नेता स्वयं अपने को मज़दूर मानकर मज़दूर-

मण्डलियों की हित साधना में लगे हुए थे। निराला ने इस समकालीन आन्दोलन का सांस्कृतिक सहायता प्रदान की। उन्होंने अपनी 'अधिवास', 'प्रकाश', 'भिक्षुक', 'स्वप्न-स्मृति', दीन' और 'समर करो जीवन में' इन कविताओं में तत्कालीन मज़दूर आन्दोलन का पक्ष लिया है।

'प्रकाश' कविता में निराला जी मज़दूरों और दीन-दुखियों को प्रगति का प्रकाश फैलानेवालों के रूप में देखते हैं। आजकल समाज उनके आन्दोलनों को रोक रहा है। वे असल में अनुराग मूर्ति कृष्ण के हृदय की गीता के समान नये तत्व-दर्शन कराने वाले हैं। सारे भ्रमों को छोडकर उनका समर्थन करना कवि के मत में हमारा कर्तव्य है -

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 4, April 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

"और लगाना गले उन्हें

जो धूल-धूसरित खडे

हुए हैं-

कबसे प्रियतम, है भ्रम?"

ईश्वर ने कभी किसी को दास नहीं बनाया है। यह समझने केलिए बडे ज्ञान की ज़रूरत नहीं। जो विवेकी है, वह समझ लेता है कि वह मज़दूर नये प्रकाश को फैलानेवाला है। मज़दूर आन्दोलन के द्वारा कवि का विश्वास है कि सामाजिक जीवन में एक नया प्रकाश फैल जाएगा और उनका नवीन दृष्टिकोण स्वीकृत होगा।

'भिक्षुक' कविता दीन-हीन भिक्षुक एवं उसके दो बच्चों का हृदयविदारक स्थिति का चित्रण करनेवाली है। देखनेवालों के कलेजों को दो टूक करनेवाले भिक्षुक का दारुण शब्द-चित्र कवि ने हमारे सम्मुख रखा है। उसकी भिक्षावृत्ति के सूक्ष्मातिसूक्ष्म वर्णन भी इसमें है उसके संग रहनेवाले दो बच्चे सदा हाथ फैलाये रहते हैं। वे एक हाथ से पेट मलते हैं और दूसरे से भीख स्वीकार करते हैं। कवि की दृष्टि में ये तीनों भिक्षावृत्ति से बहुत नगण्य लाभ मात्र उठाते हैं। उन्ही घृणात्मक आचरण से पेट भरना पडता है -

"दाता भाग्य-विधाता से क्या पाते?-

घुट आँसुओं के पीकर रह जाते।

चाट रहे जुठी पत्तल वे सभी सडक पर खडे हुए

और झपट लेने को उनसे कुत्ते भी हैं अडे हुए"।

शायद इससे अधिक हृदयविदारक एवं विचारोत्तेजक हीनता-चित्र संसार के वाङ्मय में नहीं मिलता। मज़दूर आन्दोलन की आधारभूत प्रेरणा अभावग्रस्त दीन-दुखियों की दुर्दशा सुधारने का प्रयास है। सुधारवादियों तथा प्रगति के उन्नायकों केलिए आवश्यक प्रेरणा इस कविता से मिल जाती है।

से सामंजस्य प्राप्त करने की असमान्य क्षमता निराला के व्यक्तित्व की चमक बढानेवाली है। मज़दूर आन्दोलन संबन्धी उनकी कविताएँ यह पूर्णतया व्यक्ति करती हैं कि वे प्रगतिशील विचारों के सबसे बडे उन्नायक थे।

7. किसान आन्दोलन

सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला तत्कालीन किसान आन्दोलन से पूर्णतः प्रभावित थे। सन् 1857 ईं के विद्रोह के बाद अंग्रेज़ों ने ज़मींदारों और राजाओं का पक्ष लिया। उनकी औद्योगिक नीति के कारण, कृषि पर आधारित जीवन व्यतीत करनेवालों की संख्या बढन लगी। अंग्रेज़ सरकार और किसानों के बीच में पटवारी, महाजन, कारिंदे, ज़मींदार, पुलिस, वकील आदि की एक सेना गठित की गयी। इन बिचौनियों के द्वारा गरीब किसान पीडित किये जाते थे। किसानों और इन बिचैनियों के बीच में संघर्ष शुरु हुआ। इसने सामंतवाद विरोधी आन्दोलन का रुप धारण किया था। सन् 1920 से राष्ट्रीय आन्दोलन के नेताओं ने किसानों को संगठित करना शुरु किया। तब उनमें एक राष्ट्रीय भावना जाग्रत हुई। यद्यपि अग्रेज़ों ने अपने को किसानों के हितैषी स्थापित करने के प्रयास किये, तो भो राजनीतिज्ञों के सहारे से वे उनके चंगुल से बच गये। गाँधीजी, मालवीय जी आदि राजनतिक नेताओं

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 4, April 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

ने किसानों के आन्दोलन संगठित किये। यह घोषित किया गया कि किसान हो ज़मीन का असली मालिक है। भारतीय किसानों के नवजागरण को निराला ने अपने हताश, सडक के किनारे दुकान है और वेश रूखे और अधर सूखे मुक्तकों और कुकुरमुत्ता और देवी सरस्वती लंबी कविताओं में चित्रित करने का सफल प्रयास किया है। 'हताश' चिरकालिक क्रन्दन का जीवन व्यतीत करनेवाले मानव पर प्रकाश डालनेवाली कविता है। अपनी दुर्दशा को देखकर उसका मन वज्रकठोर हो गया। उसे आशा नहीं कि दुख को अन्धतम निशि का अंत हो जाएगा और सबेरा फूट जाएगा। उसे

जीवन में ज़रा भी उज्ज्वलता या अभिनन्दन नहीं मिलता। उसकी प्रार्थना विफल हो गयी।

'वह कहता है

हृदय-कमल के जितने दल

मुरझायें, जीवन हो म्लान,

शून्य सृष्टि में मेरे प्राण

प्राप्त करें शून्यता सृष्ट की,

मेरा जग हो अतधान,

तब भी क्या ऐसे ही तम में

अटकेगा जर्जर स्यन्दन?'

जीवन-कमल के दल मुरझायेंगे। जीवन म्लान और प्राण शून्यता प्राप्त करें और मेरा संसार अप्रकट हो जाएगा। ऐसो देश में कवि पूछता है कि क्या जीवन का जर्जर स्यन्दन अटकेगा। बहुत से बिचैनियों के शोषण के कारण निराश रहनेवाले किसान का प्रतिनिधित्व हताश मानव से होता है। इस निराशा से बच जाने का एकमात्र उपाय, प्रतिकूल परिस्थितियों और शोषण नीतियों से संघर्ष करना है। कवि का परोक्ष आह्वान है कि आन्दोलन से ही जीवन में प्रगति हो पाएगी। निराशा-तप्त लोगों के बारे में कवि के मन में जा सहानुभूति और चिन्ता है, इस कविता के द्वारा व्यक्त की गया है।

'कुकुरमुत्ता' शोषण और आडम्बर के प्रतिनिधि एवं विदेशी-मूल के गुलाब और प्रकृति की गोद में उत्पन्न और पले कुकुरमुत्ते का संवाद प्रस्तुत करनेवाली कविता है। यहाँ दोनों के संवाद में गुलाब केपीटलिस्ट बताया गया -

'अबे, सुन बे, गुलाब,

भूल मत जो पायी खुशबू, रंगोंआब,

खून चूसा खाद का तू ने अशिष्ट,

डाल पर इतराता है केपीटलिस्ट"

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 4, April 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

खाद के रूप में खून चूसकर वह बढ आया है। वह अमीरों का प्यारा, साधारण से न्यारा और बनावटी जीवन व्यतीत करनेवाला है। उसकी तुलना में कुकुरमुत्ता, आडंबरहीन और सादगी का जीवन व्यतीत करनेवाला है। उतना ही नहीं, उसका अंगीकार राजा-महाराजाओं से भी होता है। गुलाब के पालक नवाब के बाग के सामने पेड हे मारे लोगों की बस्ती है। वह अभाव-पीडित लोगों का निवास स्थान है। माली की बेटी ने जब कुकुरमुत्ते का कबाब खाया और उसे अत्यंत स्वादिष्ट मालूम पडा। इसके अवगत होने पर नवाब ने भी कवाब खाया और आदेश दिया कि गुलाब के स्थान पर कुकुरमुत्ता उगाया जाए-

"चल, गुलाब जहाँ थे, उगा,

सबके साथ हम में चाहते हैं अब कुकुरमुत्ता"।

माली ने निवेदन किया कि कुकुरमुत्ता अब उगाया नहीं आता। यहाँ किसानों और बस्तियों में रहनेवाले लोगों की उपयोगिता एवं विलासिता का जीवन व्यतीत करनेवालों की तुलना की जाती है। कवि किसानों के अकृत्रिम जीवन एवं लोकोपयोगी चरित्र का अभिनन्दन करते हैं। शोषित किसानों का अंगीकर एक दिन जरूर होगा, यह आशा भी इस कविता में प्रकट की जाती है।

निराला ने किसान आन्दोलन के ऐतिहासिक पहलुओं और उनमें उठाये गये मुद्दों को चर्चा नहीं की। उलटे उन्होंने किसान की दीनता, उनपर होनेवाले शेषण ओर उनके जीवन के आकर्षण और महत्व पर प्रकाश डाला। परन्तु उन्होंने किसानों की हालत सुधारने और उनके महत्व का अंगीकार करने का आह्वान सुनाया है। उपरोक्त काव्य-सन्दर्भो से हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि कवि यह प्रबल आशा रखते थे कि किसानों का पक्ष अंगीकृत हो जाए।

8. नव साहित्यान्दोलन

आधुनिक युग में गद्य के विकास के साथ साथ काव्यधारा भी नये नये क्षेत्रों की ओर मुड रही थी। देशभक्ति की भावना, लोकहित की कामना, समाज सुधार, मातृभाषा का उद्धार आदि पर विशेष बल दिया गया। काव्य के नये आलंबन लोकप्रिय हो गये। इन नये आलंबनों की नवीनता का विशेष आकर्षण था। अग्रेज़ शासन के फलस्वरूप महाजनी सभ्यता ज्यादा बलवत्ती हो गयी। शासकों की लूट के शिकार बन गयो जनता के व्यापार-धंधे नष्ट हो गये। बहुत से लोग खेती पर आश्रय रखने लगे। भारत को अर्थनीति में बुनियादो परिवर्तन आया। इसके फलस्वरूप धर्म, समाज और आचार-विचार की जडता का भारी धक्का लगा। आधुनिक ज्ञान-विज्ञान की सुलभता के कारण मनुष्य ज्यादा बुद्धिवादी बन गया। नूतन परिस्थितियों के साथ पाठकों के मनोविकारों का सामंजस्य भी घटित हो गया। नये आलंबनों और विषयों के साथ साथ काव्य-शिल्प भी बदल गये। प्राचीन काल से मुक्तक और प्रबन्ध की जो प्रणाली चली आ रही थी, उससे कुछ भिन्न प्रणाली काव्यजगत में स्वीकृत हो गयी। नवीन काव्यक्षेत्र में छोटे छोटे पद्यात्मक निबन्धों की परंपर चलने लगा। निराला ने अपने युग के सन्दर्भ में अन्तर्दृष्टि की खोज की है। उन्होंने नवीनता को पूर्णमात्रा में अपनाकर अपने काव्यों में नये प्रयोग करने का प्रयास किया। निराला के काव्य-संसार में हम यथार्थवाद के प्रभाव से नये काव्य-विषयों का अवतरण करने की प्रणाली देखते हैं। उन्होंने 'भिक्षुक', 'तोडती पत्थर', 'विधवा', 'जुही की कली', 'दीन', 'अधिवास', 'उद्बोधन'. 'स्वप्नस्मृति', 'ध्वनि' आदि मुक्तकों और 'सरोज-स्मृति' और 'कुकुरमुत्ता' जैसी लंबी कविताओं में साधारण जीवन से लिये गये प्रमेयों और पात्रों की चर्चा की है। 'स्वामी प्रेमानन्दजी महाराज', 'तुलसीदास' और 'महाराज शिवजी

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 4, April 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

का पत्र' इन प्रबन्धात्मक काव्यों में निराला ने समाज के प्रतिष्ठित व्यक्तियों के हृदय-व्यापारों को खोलकर दिखाने का प्रयास किया है और उनसे नवीनता का समर्थन कराया है। 'राम की शक्तिपूजा', 'पंचवटी प्रसंग', 'यमुना के प्रति' और 'देवी सरस्वती' पुराणेतिहासों से संबद्ध विषयों पर आधारित हैं। परन्तु इनके पात्र नवीन विचारों से ओतप्रोत एवं नये युग के समर्थक हैं। संक्षेप में हम कह सकते हैं कि निराला के सारे के सारे काव्य-विषय नवीनता से संबन्धित और यथार्थवादी धरातल के हैं। काव्यशिल्प के क्षेत्र में भी निराला ने नवीन एवं परिमार्जित शैली अपनायी है। छायावाद के बाद जब हिन्दी काव्यक्षेत्र में शिल्प-संबन्धी मान्यताएँ बदल गयीं, तब हमारे कवि ने उनको पूर्ण रूप से आत्मसात किया। उनकी अन्तर्दृष्टि तमाम मानवीय स्थितियों को पार करने में निहित है। वे इसको अपनी मुक्ति मानते थे। यह मुक्ति छंद के बन्धनों, रूढियों और अभिजात्य को तोडने से उन्हें प्राप्त होती है। निराला परिमल की भूमिका में छंद संवन्धी अपनी धारणा यों व्यक्त करते है -

"मनष्यों की मुक्ति कर्मों के बन्धन से छुटकारा पाना है और कविता की मुक्ति छन्दों के शासन से अलग हो जाना।" 'जुही की कली' छायावाद युग में सन् 1916 ई में प्रकाशित करके निराला ने छंदों की रीतिबद्धता को तोडा था।

सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला की लंबी कविताओं में "सरोज-स्मृति" आत्मकथापरक है। परन्तु उसमें रूढिगत सांगोपांग विवरण नहीं मिलता। हृदयद्रावक एवं चुने गये प्रसंगों के आधार पर जीवन के यथार्थ का चित्रण करने और भावातिरेक चित्रण करने में कवि सफल हुए हैं। अपनी बेटी के सयाने होने पर प्रकट हुए अंग-लावण्य का चित्रण असाधारण प्रतीत होता है।

"धोरे-धीरे फिर बढा चरण,

बाल्य की केलियों का प्राङ्गण,

कर पार, कुञ्ज-तारुण्य सुधर

आयी, लावण्य भार थर-थर

कॉपा कोमलता पर सस्वर

ज्यों मालकौश नव वीणा पर'

जीवन की साधारण घटनाओं के स्मरण के द्वारा एक अनोखा शोक-गीत प्रस्तुत करके कवि ने हिन्दी साहित्य जगत् में शोक-गीत की एक नयी परंपरा का उद्घाटन किया है। 'कुकुरमुत्ता' सचमुच उपेक्षित प्राकृतिक उपज है। उसको अकृत्रिम, सहज एवं सरल जीवन का प्रतिनिधि बनाकर उसकी तुलना विदेशी मूल और प्रभुता से सम्मानित गुलाब से करने का सफल प्रयास हुआ है। कुकु मुत्ते के गुणों का वर्णन करके उसको शोषितों का प्रतिनिधि घोषित करने का उद्यम सचमुच सराहनीय है। कुकुरमुत्ते गुलाब की निन्दा करता है।

"खून चूसा खाद का तू ने अशिष्ट,

डाल पर इतराता है केपीटलिस्ट

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 4, April 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

कितने को तू ने बनाया है गुलाम।'

आखिर कुकुरमुत्ते के अंगीकार एवं सम्मान होने के वर्णन के द्वारा कवि ने उपेक्षितों के नवोत्थान एवं उत्कर्ष का समर्थन किया है। यह स्पष्ट है कि कुकुरमुत्ता कविता का प्रमेय बिलकुल निराला है।

निराला की भाषा सरलातिसरल एवं भावोत्तेजक है। घटनाओं के ताल-लय को परिचित करानेवाले ढंग से शब्दों को चुन लेने की सामर्थ्य भी दृष्टिगोचर होती है। काव्य-साधना में निरंतर प्रयोग करके अनन्य सफलता प्राप्त किये हुए विश्वकवियों में निराला का स्थान अद्वितीय है। उन्होंने इस प्रकार तत्कालीन नव साहित्यान्दोलन को अपनी प्रतिभा के द्वारा चार चाँद लगाया है और उनकी सेवाएँ सदा स्मरणीय रहेंगी।

निष्कर्ष

अनुभूतियाँ कवि के मन में उत्पन्न होती हैं। वे कविता का रूप तब ग्रहण करती हैं, जब कवि के संस्कारों से मिलकर शब्दों के रूप में प्रस्तुत की जाती हैं। समाजहित एवं मानव-कल्याण को काव्य-साधना का लक्ष्य माननेवाले कवि निराला ने युग-चेतना से प्रेरित होकर प्रगतिशील तत्वों का विवेचन किया है। कवि के रूप में निराला का योगदान जनजीवन के उत्कर्ष केलिए प्रस्तुत ये प्रगतिशील विचार हैं। उद्बाधन. ध्वनि, बादल-राग, पास ही रे हीरे की खाने, बापू के प्रति. भगवान बुद्ध के प्रति, क्या दुख दूर कर दे बन्धन, तुलसीदास और सरोज-स्मृति में रूढिवाद का खण्डन हुआ है। बापू के प्रति. समर करो जीवन में, राजे ने अपनी रखवाली की, यमुना के प्रति, महाराज शिवाजी का पत्र आदि कविताओं में निराला ने ब्रिटिश शासन के विरुद्ध अपनी आवाज़ उठायी है। सुधारवादी आन्दोलनों के बावजूद जो अछूत प्रथा समसामयिक समाज में चलती थी, उसकी आलोचना 'प्रेमसंगीत' स्वामी प्रेमानन्दजी महाराज आदि कविताओं में कवि ने प्रस्तुत की है। निराला के समय में जातिवाद का बोलबाला था। प्रेमसंगीत, गर्म पकौडी, तुलसीदास, स्वामी प्रेमानन्दजी महाराज आदि कविताओं में निराला ने जातिवाद का खण्डन करके विश्व-मानवता का समर्थन करने का प्रयास किया है। अपने समय के नारी विमोचन आन्दोलन का परिपूर्ण समर्थन निराला जी ने किया। विधवा, सम्राट अष्टम एडवर्ड के प्रति, प्रेमसंगीत, रानी और कानी, पंचवटी प्रसंग, सरोज-स्मृति आदि कविताओं में यद्यपि नारी की चिरंतन समस्याओं का व्यापक प्रतिपादन नहीं हुआ है, तो भी निराला जी ने यथासंभव नारी- जीवन की समस्याओं को चर्चा की है। अनुदिन सचेत होनेवाले भारतीय मजदूर आन्दोलन का ज़ोरदार समर्थन निरालाजी ने अपनी 'अधिवास', 'प्रकाश', 'दीन' 'भिक्षुक', 'स्वप्न-स्मृति', 'समर करो जीवन में' आदि मुक्तकों में किया है। निराला जी समसामयिक किसान आन्दोलन से प्रभावित थे। उन्होंने अपने हताश, सडक के किनारे दूकान है, वेश-रूखे अधर-सूखे मुक्तकों और कुकुरमुत्ता, 'देवी सरस्वती' जैसी लंबी कविताओं में इस आन्दोलन का ज़ोरदार पक्ष लिया है। सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला नव साहित्यान्दोलन के अग्रदूत थे। उन्होंने भिक्षुक, तोडती पत्थर, विधवा, जुही को कली, दीन, अधिवास, उद्बोधन, स्वप्न-स्मृति, ध्वनि आदि मुक्तकों और सरोज-स्मृति और कुकुरमुत्ता जैसी लंबी कविताओं में साधारण जन-जीवन से लिये गये प्रमेयों की चर्चा की है। राम की शक्तिपूजा, पंचवटी-प्रसंग, यमुना के प्रति और देवी सरस्वती पुराणेतिहासों पर आधारित हैं, तो भी इनके पात्र नवीन विचारों एवं नवयुग के समर्थक हैं। काव्य-शिल्प के क्षेत्र में निराला ने नवीन एवं परिमार्जित शैली का समर्थन किया। उन्होंने छंदों की रीतिबद्धता को तोड डाला। निराला ने काव्य-रूपों पर नये एवं सफल प्रयोग किये। प्रेम-संगीत, रानी और कानो, ये दोनों मुक्तक और यमुना के प्रति, पंचवटी प्रसंग, और देवी सरस्वती. इन लंबी कविताओं के आधार पर निराला द्वारा परिपोषित नव साहित्यान्दोलन का मूल्यांकन किया गया है। संगीत को काव्य के और काव्य को संगीत के अधिक निकट लाने का सबसे अधिक प्रयास निराला जी ने किया है।